रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष–3 अंक 31 सितम्बर 2009 मूल्यः 5 रू.

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस विशेषांक

साक्षरता की शक्ति

साक्षरता का मतलब

साक्षरता का मतलब है पढ़–लिख कर इस योग्य बनना कि सीखे हुए ज्ञान का उपयोग कर अपना, अपने परिवार और समाज के विकास में योगदान दे सकें। साक्षरता का मतलब केवल अक्षरों का ज्ञान होना या केवल पढ़ना–लिखना सीखना नहीं है। साक्षर होकर हम किसी भी विषय की जानकारी ले सकते हैं और अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। ईश्वर ने हर एक को सोचने और समझने की शक्ति दी है। इससे हमारी बुद्धि सही दिशा में आगे बढ़ती है। शिक्षा इन क्षमताओं को पहचानने और उनको आगे बढ़ाने में मदद करती है क्योंकि शिक्षा से हमारा ज्ञान बढ़ता है, हमारी कुशलताएँ बढ़ती हैं तथा हमारे गुणों और क्षमताओं का विकास होता है। बहाई लेखों के अनुसार, **"मनुष्य को अत्यन्त मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानव जाति को उसके लाभ के योग्य बना सकती है।"**

हर इंसान को मूल्यवान हीरों की खान समझना चाहिए। केवल शिक्षा ही उन्हें हीरे की तरह चमका देती है और मानवजाति को षिक्षा का लाभ लेने के योग्य बना सकती है।

साक्षरता की शक्ति

साक्षरता एक ऐसी शक्ति है जिससे हम अपने जीवन को जैसा चाहे बना सकते हैं। साक्षरता शिक्षा की सीढ़ी का पहला कदम है। शिक्षा से जीवन के विकास के सभी दरवाजे खुलते हैं। पढ़ने लिखने से बहुत से काम ऐसे हैं जिन्हें हम अपने आप कर सकते हैं और किसी का रास्ता नहीं देखना पड़ता। जैसे अपनी सहेली या परिवार को पत्र लिखना, उसका उत्तर देना, समाचार–पत्र या कोई भी पुस्तक पढ़ना, पैसों का ठीक लेन–देन करना, पढ़–लिख कर टाईपिंग, कम्प्यूटर सीखकर नौकरी कर सकते हैं। रेडियो, टी.वी. और इंटरनेट से जानकारियाँ ले कर अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं।

बरली संस्थान में जो प्रशिक्षणार्थी निरक्षर आती हैं वे

साक्षरता के साथ–साथ स्वास्थ्य, कटाई सिलाई और मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास विषय सीखकर इतनी सशक्त हो जाती हैं कि उनको काम करने का एक नया तरीका आ जाता है। उनके अन्दर आत्मविश्वास आ जाता है और काम करने की शक्ति और बढ़ जाती है। वे अपने घरों में सिलाई करती हैं, नौकरी करती हैं आंगनवाड़ी में या और दूसरी संस्था में शिक्षिका बनीं हैं, नर्स बनीं हैं, कमाई करके आत्म निर्भर हो रहीं हैं। अपनी किराना दुकान चलाती हैं। अपने गांव में महिला मण्डल बनातीं हैं, सहायता बचत समूह बनातीं हैं। बैंक से लोन लेकर मशीनें खरीदी हैं। गांव की पंचायत से सरकारी योजनाओं को समझ कर उसमें सहयोग दे रहीं हैं। इन सभी कामों के पीछे उनकी शिक्षा की शक्ति ही काम कर रही है।

बरली संस्थान में साक्षरता प्रशिक्षण के उद्देश्य

साक्षरता संस्थान के सभी प्रशिक्षणों की नींव है। साक्षरता में सभी प्रशिक्षणार्थी भाग लेते हैं जिसमें उन्हें हिन्दी भाषा सिखाई जाती है। साक्षरता पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि वे ईश्वर के पवित्र लेखों को पढ़कर समझें कि उनके जीवन का क्या उद्देश्य है तथा अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सकें। प्रशिक्षणार्थियों की पढ़ने–लिखने की क्षमता के विकास के साथ–साथ उनके जीवन में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक बदलाव लाना है जिससे प्रशिक्षणार्थी सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। उनकी समझ बढ़ाना और उन्हें इस योग्य बनाना कि वे अपने समुदायों में जाकर अपने सीखे हुए ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाए जिससे वे अपने परिवार और गाँव के विकास में सहयोग दे सकें। अंधविश्वास, छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयां दूर कर सके तथा लोगों को जागरूक करने की अपनी जिम्मेदारी समझ सकें और अपना योगदान दे सकें। साक्षरता प्रशिक्षण के बाद इस योग्य हो जाएं कि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा दे सकें और प्रशिक्षण के बाद अपने समुदाय के लोगों को पढ़ने–लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

अन्य प्रशिक्षण से साक्षरता

प्रषिक्षण की शुरूआत में प्रषिक्षणार्थी इंच टेप से गिनती सीखती हैं और इंचटेप का उपयोग करना भी सीखती हैं जैसे कपड़ों की लंबाई–चौड़ाई नाप कर उनको लिखती हैं। ड्रॉफ्ट बनाते समय नाप के अनुसार अलग–अलग कपड़ों को जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग करना सीखते हैं। स्वास्थ्य शिक्षा में प्रशिक्षणार्थी कई तरह की बीमारियों के नाम, इलाज और बचाव के तरीके जानकर लिखना सीखती हैं। 'मेरा अपना और मेरे समुदाय के विकास' विषय में सदगुण जैसे एकता, मित्रता, सहयोग, सहनशीलता, परामर्श आदि के बारे सीखती हैं ताकि वे इन गुणों का विकास कर अपना जीवन बेहतर बना सकें। रोज प्रार्थनाएँ करती हैं और जब पढ़ना–लिखना सीख जाती हैं तो उनको भी लिख कर याद करती हैं। संविधान में दिए गए अधिकारों और कर्त्तव्यों के बारे में जानती हैं। महिलाओं के अधिकार व कानून, महिला सशक्तिकरण विषयों को पढ़कर जागरूक होती हैं। नैतिक शिक्षा पर आधारित बच्चों की छोटी–छोटी कहानियाँ पढ़ना और लिखना सीखती हैं। सुबह प्रषिक्षणार्थी 2 घंटे खेती का काम सीखती हैं और इस दौरान पेड़ों, फलों, औजारों की गिनती करते हैं और उनके नाम जानते हैं। फलों और सब्जियों को तोलकर उनको लिखती हैं।

संस्थान के रोज के जीवन में साक्षरता

प्रषिक्षण के अलावा प्रषिक्षणार्थियों के पास जो उनका अपना समय होता है उसमें भी साक्षरता षामिल है। जैसे खाने के समय जो थालियाँ, गिलास तथा बिस्तर और चादर जो उन्हें दिए जाते हैं उन पर नंबर लिखा होता है, जिनको ढूंढकर वे उसका उपयोग करते हैं। इसके अलावा घड़ी देखना, दिन, महीनों के नाम, पत्र लिखना और लिफाफे पर सही तरीके से पता लिखना सिखाया जाता है। संस्थान के रसोई में हर रोज लगने वाले सामान जैसे आटा, चावल, मसालें आदि सही माप में तोलती हैं और इनका हिसाब रखना भी सीखती हैं। संस्थान में एक लाईब्रेरी है जिसमें हर विषय की पुस्तकें हैं। प्रषिक्षणार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे लाईब्रेरी में अपने खाली समय में आकर कोई भी पुस्तक या अखबार पढ़ें ताकि उनमें पढ़ने की आदत बने और किसी भी विषय को जानने की जिज्ञासा बढ़े।

प्रषिक्षकों का प्रषिक्षण

संस्थान में आई प्रषिक्षणार्थियों में से जो 8वीं या उससे ज्यादा पढ़ी हुई होती हैं उन्हें संस्थान में प्रषिक्षकों का प्रषिक्षण दिया जाता है। इस प्रषिक्षण में उन्हें साक्षरता के साथ स्वास्थ्य षिक्षा, कटाई–सिलाई और मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास विषय पढ़ाए जाते हैं और साथ ही उन्हें इन्हीं विषयों को पढ़ाने का तरीका भी सिखाया जाता है। इस तरह इन प्रषिक्षणार्थियों का दोतरफा प्रषिक्षण होता है जिसमें वे पढ़ने के साथ–साथ पढ़ाना भी सीख जाती हैं। उन्हें साथ–साथ इस बात के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने गाँव वापस जाकर अपने परिवार और समुदाय के लोगों को पढ़ने

लिखने के लिए बढ़ावा दे सकें और उनको समझा सकें कि जीवन में पढ़ना–लिखना कितना जरूरी है। संस्थान में ये प्रषिक्षणार्थी उन प्रषिक्षणार्थियों को हिन्दी पढ़ना लिखना और बोलना सिखाती हैं जो कभी भी स्कूल नहीं गई है। उन्हें बात के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है कि वे गाँव में दूसरों को साक्षर करने में सहयोग दें। इस संबंध में बहाई लेखों में कहा गया है कि "साक्षर बनाना या साक्षर करना एक आध्यात्मिक कार्य है, पूजा के समान है, एक सेवा है, अंधेरे में दिया जलाने के समान है और ऐसे शिक्षक को धन्य माना जाता है जो दूसरों को पढ़ाने का काम अपने ऊपर लेते है।" दूसरों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेने वाले शिक्षक को महान कहा गया है क्योंकि यह एक महान, नेक और पवित्र कार्य है।

साक्षरता से हम अपने जीवन के विकास के साथ परिवार और समाज का विकास कर सकते है। साक्षरता जीवन की नींव है जितनी मजबूत नींव होती है उतना अच्छा विकास होता हैं। हमारे सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए साक्षरता पहली सीढ़ी है। 'बरली की दुनिया' के इस अंक में हम चर्चा करेंगे कि साक्षरता से किस तरह हम अपना, अपने परिवार और अपने समुदाय का विकास कर स्वयं और दूसरों को सशक्त कर सकते हैं।

साक्षरता से अपने विकास की षक्ति

जब हम साक्षर होते हैं तो हमारे लिए कई रास्ते अपने आप खुल जाते हैं। हम अपनी पसंद के काम का चुनाव कर सकते हैं। अपने मनपसंद विषयों को पढ़ सकते हैं और अपने जीवन का लक्ष्य बना सकते हैं। जो चाहे डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षक, वैज्ञानिक, पत्रकार, कलाकार, खिलाड़ी, लेखक, कवि, बैंककर्मी, पुलिस, व्यवसायी बन सकते हैं। हम अपनी बुद्धि का सही उपयोग तभी कर सकते हैं जब हमारी षिक्षा सही होती है। इंसान ने अपनी बुद्धि से ही विज्ञान का आविष्कार किया है। बिजली, पंखा, साईकल, स्कूटर, बस, ट्रेन, मोबाईल, कम्प्यूटर टी.वी, रेडियो और रोज के जीवन में इस्तेमाल होने वाली चीजें बनाई है। हम चाहे जो भी शिक्षा ले रहे हों खेती कर रहें हो, स्वास्थ्य सेवा दे रहे हों या इंजीनियर हों या डॉक्टर या सिलाई ही कर रहे हो, इन सभी में शिक्षा का सही उपयोग कर अपनी योग्यता व अनुभव बढ़ा सकते हैं।

घर बैठे अखबार, रेडियो, टी.वी. और इंटरनेट का उपयोग कर दुनिया में हो रही घटनाओं के बारे में जान सकते हैं और दूसरों को भी बता सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा किसी भी क्षेत्र या विषय की कोई सी भी जानकारी ले सकते हैं। एक जगह से दूसरी जगह एक मिनट में संदेश भेज सकते हैं और फोन पर बातें कर सकते हैं लेकिन इसके लिए शिक्षित व प्रशिक्षित होना जरूरी है।

पढ़लिख कर सरकार द्वारा दिए गए अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को जान सकते हैं और उनका सही उपयोग कर सकते हैं। जब हम अपने अधिकारों को अच्छी तरह समझ लेते हैं तो हमारा कोई शोषण नहीं कर सकता है। अपने परिवार में और काम की जगह पर जो अधिकार व सुविधाएं हमें मिलने चाहिए परन्तु नहीं मिलते तो ऐसे अधिकारों को पाने के लिए मानव अधिकार आयोग व महिला आयोग में सम्पर्क कर सकते हैं। इसके लिए पूरी सही तरीके से जानकारी होनी चाहिए कि हमें अपनी बात वहाँ तक कैसे पहुँचानी है।

पढ़ लिखकर हम रोजगार या व्यवसाय करके आर्थिक रूप से सशक्त हो कर अपना व परिवार का पालन कर सकते हैं और दूसरों की सेवा कर सकते हैं। हम सभी में अलग–अलग क्षमताएँ होती हैं जिनका उपयोग कर हम पैसे कमा सकते हैं। खेती करना हो तो नए वैज्ञानिक तरीके सीखकर और प्रषिक्षित होकर कम जमीन व कम पानी में ज्यादा फसल उगा सकते हैं। कोई भी कला जैसे कटाई–सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, बाटिक, ब्लॉक प्रिटिंग ,पेंटिंग सिखाने का प्रषिक्षण संस्थान खोल सकते हैं या इनको बनाकर सही कीमत में बेच सकते हैं। सोलर कुकर उपयोग करने का तरीका सीखकर खाने पीने की चीजें बनाकर बेच सकते हैं और दूसरों को भी सीखा सकते हैं। पढ़ लिख कर महिलाएँ आंगनवाड़ी में काम कर सकती हैं या स्वास्थ्य कार्यकर्ता बन सकती हैं। कम्प्यूटर और टाइपिंग सीखकर दूसरों को सिखा सकते हैं या नौकरी कर सकते हैं। गाँव के बच्चों और महिलाओं को पढ़ाने का काम कर सकते हैं या अपना स्कूल भी खोल सकते हैं। सभी जानकारी समझ कर स्वयं ही फॉर्म भर सकते हैं और लोन के रूपए सही ढंग से खर्च कर सकते हैं। इसके अलावा महिलाएँ स्वयं सहायता समूह बनाकर पैसों की बचत कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकती हैं। सरकार की कई ऐसी सरकारी योजनाएं आती रहती है जिनकी जानकारी लेकर और समझकर फायदा उठा सकते हैं। आत्मनिर्भर बनकर हमारा अपने पर विश्वास बढ़ता हैं और हम ज्यादा अच्छा करने की कोशिश करते हैं।

साक्षरता से हम मानसिक रूप से भी सशक्त होते हैं। ईश्वर ने हम सबको विचार करने, सोचने व सही और गलत क्या है

इसका अंतर जानने के लिए बुद्धि दी है। अच्छी और सही शिक्षा से ज्ञान व योग्यता बढ़ती है। इससे समाज में सम्मान भी बढ़ता है। विचार अच्छे होते हैं तो अच्छे काम करते हैं। हमारे अंदर नई चेतना का विकास होता है और हम स्वतंत्र रूप से सोच समझकर निर्णय ले सकते हैं। हमारे ज्ञान का स्तर बढ़ता है, व्यवहार में बदलाव आता है, परिस्थिति को समझ सकते हैं। जीवन के प्रति सही सोच मानसिक विकास में सहायक होती है। हमारे अंदर आत्मविष्वास बढ़ता है और हम जीवन की किसी भी मुष्किल का सामना करने से नहीं डरते हैं।

साक्षर होकर हम पवित्र पुस्तकों को पढ़कर स्वयं ईश्वरीय अवतारों की शिक्षाओं को पढ़कर उसका मतलब समझकर अपने जीवन का उद्देश्य जानते हैं। अपने अंदर अच्छे ुगुणों का विकास कर अपनी व दूसरों की सेवा कर सकते हैं। जब हम पढ़ते हैं तो हमारे मन में प्रश्न उठते हैं, उनके उत्तरों को जानने के लिए और पढ़ते हैं, इस तरह हमारे पढ़ने का सिलसिला जारी रहता है और हम ज्यादा ज्ञान पाते हैं और इस तरह सत्य की स्वयं खोज कर सकते हैं। आध्यात्मिक शिक्षा से हम एक दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग करना सीखते हैं और सभी काम शुद्ध मन से, ईमानदारी, प्रेम, दया, करूणा और दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। अच्छे ज्ञान से हमें नशा, पीठ पीछे बुराई, चोरी नहीं करने जैसी आदतों कों सीखते हैं। सही शिक्षा लेकर गलत रीति रिवाजों में सुधार कर सकते है। बच्चों को शुरू से ही ईमानदारी, अनुशासन, सच्चाई, बड़ों का आदर करना जैसे आध्यात्मिक गुण सिखाने से वे आगे चलकर अच्छे इंसान बनते हैं।

साक्षरता से अपने परिवार का विकास

शिक्षित होने के नाते हमारा पहला कर्त्तव्य बनता है कि षिक्षा के दीपक से हम अपने घर में उजियारा फैलाएं। अपने परिवार में लड़का हो या लड़की दोनों को पढ़ने लिखने भेजें। जब दोनों पढ़े लिखे होंगे और दोनों को समानता देंगे तो ही सही विकास होगा। लड़कियों को स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने का अवसर देना चाहिए और सभी को यह समझाना चाहिए कि लड़कियां भी लड़कों के बराबर हैं। बहाउल्लाह ने कहा है कि यदि माता–पिता लड़का या लड़की में से किसी एक को ही पढ़ा सकते हैं तो उन्हें लड़की को पढ़ाना चाहिए क्योंकि लड़कियाँ भविष्य में माताएँ बनेंगी और एक शिक्षित माता ही बच्चों का अच्छे ढ़ंग से पालन–पोषण कर सकती है। महिला शिक्षित होती है तो पूरे परिवार को शिक्षित कर स्वस्थ और खुशहाल बनाती है।

साक्षरता से समाज के विकास की षक्ति

सामाजिक विकास का मतलब है लोग स्वस्थ और सुखी हो। साक्षरता और स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। साक्षर होकर हम अपने षरीर, मन, आत्मा और अपने समाज को सभी तरह की जानकारियाँ लेकर स्वस्थ और सुखी रख सकते है। जब हम स्वस्थ और सुखी होगें तो ही दूसरों को स्वस्थ और सुखी रहने में मदद कर सकते है। सही जानकारी नहीं होने के कारण लोग बहुत सी बीमारियों से पीड़ित है। जब हमें बीमारियों के कारण और बचाव की सही जानकारी होगी तो बहुत सी बीमारियों जैसे उल्टी, दस्त, सर्दी–खांसी, फोड़े–फुंसी, पेट दर्द, सिर दर्द, आदि से काफी हद तक बच सकते हैं। खाना, पानी, कपड़े, घर तथा अपने आसपास की जगह साफ रखकर हम स्वस्थ रह सकते हैं एवं कई तरह की बीमारियों से बच सकते हैं। साक्षर होने से पता रहता है कि डॉक्टर की लिखी दवा को सही समय पर खाना है, गर्भवती महिला को टीके कब लगवाने हैं और कब कौन सी जाँच करवानी है। बच्चों के टीके कब और कौन से लगेंगे? बीमार की देखभाल कैसे कर सकते है? स्वास्थ्य को लेकर कौन सी सरकारी योजनाएं चल रही है और उनका फायदा कैसे लेना है।

हमारे समाज में दहेज, जाति भेदभाव, बलात्कार, भ्रूण हत्या, अंधविश्वास आदि कई तरह की बुराईयाँ हैं। उदाहरण के लिए बाल विवाह कानूनी भी एक सामाजिक बुराई भी है और अपराध भी। भारतीय कानून के अनुसार शादी के लिए लड़की की उम्र कम से कम 18 साल और लड़के की 21 साल होनी चाहिए। यदि कोई माता–पिता अपने लड़की या लड़के की षादी कम उम्र में करवाते हैं तो वो भी अपराधी हैं और उन्हे जेल जाना पड़ेगा। जब भी किसी लड़की की 18 साल की उम्र से पहले षादी की जाती है तो वह शारीरिक और मानसिक रूप से माँ बनने के लिए तैयार नही होती। इस कारण षारीरिक कमजोरी से मां और बच्चे की मृत्यु हो जाती है।इन सब सामाजिक बुराईयों से बचने का एक ही तरीका है कि महिलाएँ और पुरूष सामाजिक षिक्षाएं लेकर जब समझ लेंगे कि कानून सभी की भलाई के लिए हैं तो लोग उसका पालन करेंगे और शिक्षित होकर खुद कानून को समझने के साथ–साथ दूसरों को भी षिक्षित करेंगे। आध्यात्मिक शिक्षा से प्रेम, षांति, एकता, भाईचारा, महिला–पुरूष समानता लाएंगे तब ही सही रूप में सामाजिक विकास होगा और समाज में अपराध, बुराईयां अपने आप कम हो जाएगी।

संस्थान के समाचार

बरली संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 8 सितंबर 2009 को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के अलीराजपुर, खरगोन, हरदा, बड़वानी व छत्तीसगढ़, बिहार एवं उड़ीसा प्रांतों के 28 गाँव की 75 आदिवासी महिलाओं ने भाग लिया।

संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने संस्थान का परिचय दिया और कहा कि साक्षरता ऐसी नींव है जिसके आधार पर इंसान का अपना, अपने परिवार का, समुदाय तथा देश का सारा विकास निर्भर करता है। साक्षरता केवल सशक्तिकरण का माध्यम ही नहीं बल्कि व्यक्ति तथा समाज के बदलाव की पूंजी है।

मुख्य अतिथि डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान के श्री आर.एन. बैरवा आई.ए.एस. (सेवानिवृत) महानिदेशक ने कहा कुपोषण तथा निरक्षरता को कम करने के लिए आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षण से सशक्त कर बरली संस्थान सफलतापूर्वक काम कर रहा है क्योंकि वे अपने गाँव जाकर अपने परिवार व समुदाय को हर दिशा में जागरूक कर रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष मध्यप्रदेश यूनिसेफ भोपाल के डॉ. संजय सिंह ने शिक्षा के अंतर को बताते हुए कहा कि सही शिक्षा हमें जानवर से इंसान बनाती हैं और अगर किसी को गलत शिक्षा मिले तो वह इंसान को जानवर बना देती है। बरली संस्थान में महिलाओं का विकास उनकी संस्कृति और रहन–सहन को ध्यान में रखकर किया जाता हैं। यही महिलाओं के विकास का सही रास्ता है।

विशेष अतिथि श्रीमती रमा बैरवा ने भी महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित होने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यशाला के उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथी प्रो. प्रतीक श्रीवास्तव, अर्थशास्त्री व वरिष्ठ पत्रकार ने कहा कि महिला और पुरूष दोंनो एक पक्षी के पंख के समान है जब तक दोनों पंख मजबूत नहीं होंगे तब तक पक्षी ऊंची उड़ान नहीं भर सकता है। लेकिन सच्चाई यह है कि ग्रामीण भारत की महिलाओं का पंख अभी भी बहुत कमजोर है क्योंकि उन्हें शिक्षा से दूर रखा गया है। इसी कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती स्मिता राठौड, प्रिन्सिपल इंडस वर्ल्ड स्कूल इंदौर ने कहा "महिलाओं की साक्षरता जीवन में हर जगह काम आती है। चाहे परिवार में हो या समाज में साक्षरता आगे बढ़ने के लिए बहुत जरूरी है।

लेप्रा सोसायटी के बुनियाद प्रोजेक्ट की प्रभारी अधिकारी सुश्री प्रीती निगम ने कहा कि साक्षरता का मतलब सिर्फ पढ़ना–लिखना ही नही है। उसका अपने जीवन में भी उपयोग करना चाहिए।

पहल जन सहयोग विकास संस्थान के श्री प्रवीण गोखले व श्रीमती अनुपा गोखले ने प्रशिक्षणार्थियों को महिलाओ के अधिकार व कानून के बारे में जानकारी दी।

तीन दिनों के कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने साक्षरता

का महत्व, साक्षरता और हमारा विकास, साक्षरता और दवाओं का उपयोग, मानव अधिकार, महिलाओं और लड़कियों में पूँजी लगाओं आदि विषयों पर चर्चा की। प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव सुनाएं। बड़वानी जिले की

आरती परिहार ने कहा "अगर हम पढ़े लिखे होंगे तो परिवार में सही ज्ञान देंगे।" आलीराजपुर की इंद्रा रावत ने कहा "महिलाओं और लड़कियों के विकास के लिए शिक्षा जरूरी है क्योंकि वे शिक्षित होकर अपना और अपने परिवार का सही ढंग से देखभाल कर पाएगी।" खरगोन की सुमन सोलंकी ने कहा "साक्षर इंसान स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित होकर अपना और अपने परिवार के स्वास्थ्य का अच्छे ढंग से ध्यान रख सकता है।" बिहार की नीतू ने कहा "महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए शिक्षा की जरूरत होती है क्योंकि महिलाएं जागरूक होंगी तो वह अपना, अपने परिवार और समाज का विकास कर पाएंगी। प्रशिक्षणार्थियों ने साक्षरता पर भिलाली और निमाड़ी भाषा में गीत गाए।

'सामुदायिक रेडियो' पर कार्यशाला

26–27 अगस्त 2009 को भोपाल में मध्य प्रदेश शासन की संस्था वन्या, यूनिसेफ और आइडियोसिन्क की ओर से तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में चर्चा हुई कि गाँव का विकास, शिक्षा, महिला विकास और प्रशासन से संपर्क के लिए सामुदायिक रेडियो एक महत्वपूर्ण साधन बन सकता है। इससे गांवों के लिए सरकारी योजना और विभिन्न सूचना का प्रचार–प्रसार सीमित दायरे में किया जा सकता है। समाज के युवा, बालक और महिला वर्ग तक विकास को पहुंचाने के लिए सामुदायिक रेडियो को माध्यम बनाना होगा। मध्यप्रदेश सरकार ने जानकारी दी कि बहुत सारे आदिवासी इलाकों में सामुदायिक रेडियो चलाने की योजना है। कार्यशाला में आए आदिवासियों ने कहा वे वापस जाकर रेडियो स्टेशन खोलेंगे। इसके बाद कई संस्थाओं के द्वारा चलाए जा रहे रेडियो कार्यक्रम के अनुभव सुनाए। इस कार्यक्रम में बरली संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक ने भी भाग लिया।

संस्थान सांस्कृतिक कार्यक्रम में आमंत्रित

20 सितंबर 2009 को बी.सी.एम. फाउंडेशन, इंदौर द्वारा देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के सभागृह में संगीतमय कार्यक्रम आयोजित किया गया था। बरली संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों और स्टाफ ने कार्यक्रम में भाग लेकर संगीत का पूरा आनंद उठाया।

गाँवों में सोलर कुकर लगाए गए

26 से 30 सितंबर के दौरान बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान से प्रशिक्षित श्री विक्रम तोमर और श्री नारायण सोलंकी झाबुआ के गेलरबड़ी और भोयरा गांवों में गए। वहां उन्होंने 5 सोलर कुकर लगाए। ये सोलर कुकर भारतीय स्टेट बैंक से संचालित स्वयं सहायता समूह की ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं को दिया गए जिसमें बैंक द्वारा 1500 रूपए लोन चार प्रतिशत ब्याज दर पर

दिया। विक्रम और नारायण ने लोगों को सोलर कुकर की ट्रेनिंग दी और उनको इसके फायदों के बारे में बताया, उनको उपयोग करने का तरीका समझाया तथा सोलर कुकर को सेट करना भी सिखाया।

सोलर कुकरों का मूल्यांकन भी किया गया। धार जिले के नलवानिया, कोडबा, डही तथा आलीराजपुर जिले के उन्हाला, वालपुर और टेमला गाँवों में विक्रम व नारायण

सोलंकी उन परिवारों से मिले जहाँ लोग सोलर कुकर का उपयोग काफी अच्छी तरह से कर रहें हैं। उन्होंने लोगों से जानकारी इक्कट्ठी की कि गाँवों में लोग सोलर कुकर का उपयोग किस तरह करते है। लोगों ने बताया कि अब उन्हें जंगल से लकड़ी नहीं लानी पड़ती है और लकड़ी से होने वाले धुएँ से भी बच जाते हैं और समय की बचत होती है।

संस्थान के प्रबंधक संगोष्ठी में आमंत्रित

23 सितंबर 2009 को बंसल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, सुशीला देवी बंसल कॉलेज ऑफ टेक्नलॉजी और के.सी.बी. टेक्नीकल एकेडमी द्वारा 'ऊर्जा के प्रयोग और पर्यावरण में विकास' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में बरली संस्थान के प्रबंधक श्री

जिम्मी मगिलिगन ने संस्थान में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को कम्प्यूटर से चित्र दिखाकर जानकारी दी।

संस्थान में आए मेहमान

- 24 सितम्बर को जन जागरण अभियान से भारत के अलग–अलग राज्यों के 200 लोगों का समूह संस्थान देखने आया। उन्हें संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक ने

प्रशिक्षण कार्यक्रम और अन्य गतिविधियों की जानकारी दी। राष्ट्रीय युवा परियोजना के संस्थापक डा. एस. एन. सुब्बा राव ने जन जागरण अभियान के बारे में बताया। उन्होंने कहा "हम 12 राज्यों के 153 युवा महिलाओं और पुरूषों के साथ इंदौर की अनेक संस्थाओं में गए। गुरूद्वारा में लोगों को पाठ करते, मस्जिद में नमाज पढ़ते, चर्च में प्रार्थना करते और मंदिर में पूजा करते देखा। लेकिन बरली संस्थान में आकर बहुत खुषी हुई क्योंकि यह स्थान कर्म संस्कृति का मंदिर है।"

राष्ट्रीय युवा परियोजना के संस्थापक डा. एस. एन. सुब्बा राव बरली संस्थान में

- 10 सितम्बर को चोईथराम इंटरनेशनल स्कूल से पाँचवी कक्षा के 16 विद्यार्थियों का समूह संस्थान देखने आया। संस्थान देखने के बाद उनकी शिक्षिका श्रीमती प्रीतीसिंग ने कहा "संस्थान में महिलाओं को प्रशिक्षित करने का तरीका बहुत ही अच्छा है जिससे वे यहां के प्रशिक्षण से जागरूक होकर गाँव में दूसरो को भी सीखी गई बातों की जानकारी देती हैं।"

12 सितम्बर को स्टेट बैंक ऑफ पाटियाला के शाखा प्रबंधक श्री एस. एस. अरोरा और श्री अश्वनी महाजन संस्थान आए। उन्होंने कहा "संस्थान में आकर अनुभव किया कि किस तरह यहाँ पर कचरा कहीं जाने वाली हर चीजों का दोबारा उपयोग किया जाता है।"

- 13 सितम्बर को रंगवाला व्यापारी, इन्दौर से श्री शाबिर हुसैन रंगवाल अपनी बेटी सुजी रेहाना के साथ संस्थान आए। उन्होंने कहा "संस्थान के प्रशिक्षण से ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बनेगी और आगे बढ़ेंगी।"
- 14 सितम्बर को देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के एकेडमिक स्टाफ कॉलेज से प्रोफेसरों का समूह संस्थान देखने आया। शासकीय कॉलेज शुजालपुर की सुश्री लक्ष्मी वास्केल ने कहा "बरली संस्थान का उद्देश्य वास्तव में महिलाओं का सशक्तीकरण करना है।" शासकीय कॉलेज रतलाम की रोशनी रावत ने कहा "बरली संस्थान के कामों से हमने जाना कि कैसे निरक्षर महिलाओं को शिक्षित कर सही तरीके से जीवन जीने की कला सिखाई जाती है। यहाँ प्रत्येक काम को करने और नई चीजों का निर्माण देखकर हमें अपने जीवन में भी कुछ करने की आशा जागी।" शासकीय कन्या महाविद्यालय की प्रो. ममता पथराड़े इन्दौर ने कहा "आदिवासी महिलाओं के विकास के लिए यहाँ जो प्रशिक्षण चलाए जा रहे हैं वे बहुत ही सराहनीय है।"
- 18 सितम्बर को गुजराती साईंस कॉलेज, इन्दौर के प्रो. एम. कजारायह और प्रो. विद्या दूबे ने संस्थान देखने के बाद कहा ''मेरा सौभाग्य है कि मैं इस जगह पर आया और मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगा।''
- 22 सितम्बर को महाराष्ट्र की अनाम प्रेम संस्था से श्री रमेश के. सॉवत और श्री भिकाजी दत्ताराम संस्थान आए और कहा "सौर ऊर्जा का उपयोग बहुत अच्छे तरीके से हो रहा है। जनक दीदी बरली संस्था की जनक है।"

विस्तार केन्द्र छत्तीसगढ़ से समाचार

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक 19–20 सितंबर को छत्तीसगढ़ के विस्तार केन्द्रों की गतिविधियों में भाग लेने गए। 19 सितंबर को गोविन्दपुर के

कांकेर के कलेक्टर श्रीमान अविनाश चम्पावत प्रमाण पत्र देते हुए

पंचायत भवन में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांकेर कलेक्टर श्रीमान अविनाश चम्पावत ने कहा "डर तो सबको लगता है लेकिन डर के आगे जीत है। आप अपने आस–पास समाज को जो संदेश दे रहे है वह बहुत अच्छा है। आप सबके अंदर ज्योति है उसे और दूसरों तक जलाना है " इस अवसर पर निदेशिका ने कहा "कई बार लोग नींद में सपना देखते है पर हमे सोच समझ कर ऐसा सपना देखना चाहिए जिसे हम पूरा कर पाए। आप सभी एक जलते हुए दीपक है जिसे अपनी रौशनी आस–पास सभी जगह ले जानी है। आप ऐसे काम करें कि अपने क्षेत्र में या दुनिया में कहीं भी हिंसा न हो, कोई बच्चा नक्सलवादी न बने, प्रेम, शांति, एकता, भाईचारा बढ़े।

संस्थान के प्रबंधक ने कहा "बरली विस्तार केन्द्र यहाँ पर बहुत अच्छा काम कर रही है। आपका केन्द्र आगे बढ़ें और

ईश्वर मुझे ऐसा अवसर दे कि मैं इसके आगे का विकास देखने आ सकूँ। इस अवसर पर कुछ प्रशिक्षणार्थियों ने भी अनुभव सुनाए। श्रीमती रमतुला मण्डावी ने कहा "विस्तार केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के बाद मैं अपने समुदाय में विशेषकर महिलाओं को स्वास्थ्य और एच.आई.वी की जानकारी देती हूँ।" कु. विनिता कलम ने कहा "किसी भी कार्य को सही तरीके से करने के लिए प्रशिक्षण लेना बहुत जरूरी है। मैंने यह सीखा कि किसी छोटी–बड़ी समस्या का हल परामर्श द्वारा किया जा सकता है।" केन्द्र प्रशिक्षिका श्रीमती ममता रावल ने कहा "बरली संस्थान से प्रशिक्षण लेने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और अब मैं विस्तार केन्द्र में काम कर रही हूँ।" प्रशिक्षिका श्रीमती मना शर्मा ने कहा "मुझे बरली संस्थान के प्रशिक्षण से ही यह प्रेरणा मिली कि हमें महिलाओं के विकास के लिए काम करना चाहिए। इसलिए मैं त्रिपुरा से यहाँ आकर काम कर रही हूँ।"

20 सितम्बर को ग्राम बेवरती में निदेशिका और प्रबंधक ने पूर्व प्रशिक्षणार्थियों से भेंट की। डॉ. मगिलिगन ने कहा "मुझे पूर्व प्रशिक्षणार्थियों से मिलकर बहुत खुशी हुई। महिलाएं कमजोर नहीं है आज बहुत आगे बढ़ चुकी है जैसे संस्थान में महिलाएं ट्रेक्टर चलाती है, ऐसे ही दुनिया में कई महिलाएं आसमान में हवाई जहाज उड़ाती है आदि विकास कर रही हैं। श्री जिम्मी ने कहा "अपने परिवार, गाँव तथा समाज के विकास में सहायक बनो। यही मेरी शुभकामनाएं हैं।"

इस पत्रिका के प्रकाषन में सहयोगी

सुश्री विजयश्री, श्रीमती ढेडी व श्री जिम्मी मगिलिगन

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**